Impact Factor (QJIF): 8.38 E-ISSN: 2583-7206, P-ISSN: 3049-2432

International Journal of All Subject Research

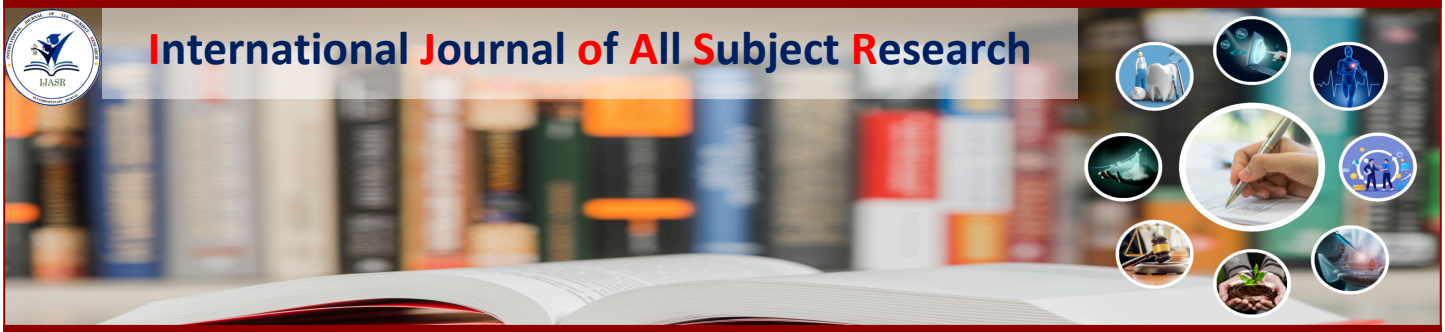

Received: 12/March/2026 **IJASR:** 2026; 5(3):29-33 **Accepted:** 20/April/2026

सामाजिक स्तरीकरण, गतिशीलता एवं परिवर्तन: एक त्रिकोणीय अंतर्संबंधात्मक अध्ययन

[*1]सत्य नरायन यादव और [2]मंजुलता गुप्ता

[*1]सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, बोरावां (खरगोन), मध्य प्रदेश, भारत।

[2]सहायक प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, बोरावाँ, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र समाजशास्त्र के तीन मूलभूत और अंतर्संबंधित अवधारणाओं सामाजिक स्तरीकरण, सामाजिक गतिशीलता और सामाजिक परिवर्तन का एक तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार समाज का ढांचा (स्तरीकरण) व्यक्ति की उन्नति (गतिशीलता) को प्रभावित करता है और यह प्रक्रिया अंततः समाज के संपूर्ण रूपांतरण (परिवर्तन) में कैसे परिणत होती है। अध्ययन के दौरान वर्णनात्मक और गुणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है, जिसमें पिरिटिम सोरोकिन, मैक्स वेबर और एम.एन. श्रीनिवास जैसे विद्वानों के सैद्धांतिक दृष्टिकोणों को आधार बनाया गया है। शोध यह प्रतिपादित करता है कि ये तीनों अवधारणाएं एक 'त्रिकोणीय अंतर्संबंध' के रूप में कार्य करती हैं, जहाँ एक घटक में होने वाला बदलाव शेष दो घटकों को अनिवार्य रूप से प्रभावित करता है। विश्लेषण के प्रथम चरण में यह पाया गया कि स्तरीकरण की प्रकृति, चाहे वह जाति आधारित 'बंद' व्यवस्था हो या वर्ग आधारित 'खुली' व्यवस्था, सामाजिक गतिशीलता की दर को सीधे तौर पर नियंत्रित करती है। जहाँ पारंपरिक भारतीय समाज में जन्म आधारित स्तरीकरण ने गतिशीलता को सीमित किया, वहीं आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था और योग्यता आधारित मापदंडों ने इसे व्यापक बनाया है। शोध का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष यह रेखांकित करता है कि जब समाज का कोई बड़ा समूह अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार करता है, तो वह समाज के स्थापित मूल्यों, संस्थाओं और शक्ति-संरचनाओं में गहरा परिवर्तन लाता है। उदाहरण के तौर पर, शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक गतिशीलता ने पितृसत्तात्मक ढांचे और पारिवारिक संस्था में युगांतकारी परिवर्तन किए हैं। अंतिम चरण में, शोध यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक परिवर्तन की यह प्रक्रिया पुनः स्तरीकरण के नए मापदंडों को जन्म देती है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, 'डिजिटल साक्षरता', 'तकनीकी कौशल' और 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' (AI) स्तरीकरण के नए आधार बनकर उभरे हैं, जिन्होंने 'डिजिटल डिवाइड' जैसी नई चुनौतियाँ पैदा की हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) जैसे नीतिगत हस्तक्षेपों के माध्यम से इस गतिशीलता को और अधिक सुगम बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। निष्कर्षतः, यह शोध पत्र यह सुझाव देता है कि एक प्रगतिशील और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के लिए स्तरीकरण के ढांचे को लचीला रखना और शिक्षा एवं तकनीक के माध्यम से गतिशीलता के समान अवसर प्रदान करना अनिवार्य है। यह अध्ययन न केवल समाजशास्त्रीय सिद्धांतों को स्पष्ट करता है, बल्कि समकालीन सामाजिक बदलावों को समझने के लिए एक ठोस वैचारिक रूपरेखा भी प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: सामाजिक स्तरीकरण, सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक परिवर्तन।

1. प्रस्तावना

मानव समाज की प्रकृति सदैव परिवर्तनशील और जटिल रही है। समाजशास्त्र के अध्ययन में सामाजिक संरचना को समझने के लिए सामाजिक स्तरीकरण, सामाजिक गतिशीलता और सामाजिक परिवर्तन तीन ऐसे स्तंभ हैं, जो एक-दूसरे के पूरक और परस्पर निर्भर हैं। सामाजिक स्तरीकरण उस व्यवस्था को दर्शाता है जिसके द्वारा समाज विभिन्न समूहों को ऊंच-नीच के सोपानक्रम (Hierarchy) में विभाजित करता है। यह विभाजन धन, शक्ति, प्रतिष्ठा, जाति या वर्ग पर आधारित हो सकता है। स्तरीकरण समाज को एक ढांचा प्रदान करता है, किंतु यह ढांचा पूरी तरह स्थिर नहीं होता। इसी ढांचे के भीतर जब व्यक्ति या समूह अपनी सामाजिक स्थिति को बदलते हैं, तो उसे 'सामाजिक गतिशीलता' कहा जाता है। सामाजिक गतिशीलता समाज की जीवंतता का परिचायक है। एक 'बंद समाज' (जैसे पारंपरिक जाति व्यवस्था) में गतिशीलता के अवसर सीमित होते हैं, जबकि एक 'खुला समाज' (जैसे आधुनिक वर्ग व्यवस्था) योग्यता और शिक्षा के आधार पर व्यक्ति को ऊपर उठने के असीमित अवसर प्रदान करता है। जब यह गतिशीलता व्यापक स्तर पर होती है और समाज के स्थापित प्रतिमानों, मूल्यों,

***Corresponding Author:** सत्य नरायन यादव

संस्थाओं और तकनीकी ढांचे को प्रभावित करने लगती है, तो वह 'सामाजिक परिवर्तन' का मार्ग प्रशस्त करती है। सामाजिक परिवर्तन केवल संरचनात्मक बदलाव नहीं है, बल्कि यह समाज के सोचने के ढंग और जीवन जीने की शैली में होने वाला मौलिक रूपांतरण है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन तीनों अवधारणाओं के 'त्रिकोणीय अंतर्संबंध' का विश्लेषण किया गया है। शोध का तर्क है कि स्तरीकरण की कठोरता गतिशीलता को बाधित करती है, जिससे सामाजिक परिवर्तन की गति मंद हो जाती है। इसके विपरीत, आधुनिक शिक्षा और वैश्वीकरण ने गतिशीलता के नए द्वार खोले हैं, जिससे पारंपरिक स्तरीकरण के आधार टूट रहे हैं और समाज एक नई दिशा की ओर अग्रसर हो रहा है। यह अध्ययन विशेष रूप से इस बात पर केंद्रित है कि कैसे यह त्रिकोणीय प्रक्रिया समकालीन समाज को पुनर्गठित कर रही है।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा

प्रस्तुत शोध का आधार पिरिटिम सोरोकिन, एम.एन. श्रीनिवास और योगेंद्र सिंह जैसे विद्वानों के शास्त्रीय एवं आधुनिक कार्य हैं। सोरोकिन (1927) ने सामाजिक गतिशीलता के लंबवत और क्षैतिज आयामों को स्पष्ट कर स्तरीकरण और गतिशीलता के मध्य सैद्धांतिक संबंध स्थापित किए। भारतीय संदर्भ में श्रीनिवास (1966) ने 'संस्कृतिकरण' के माध्यम से पारंपरिक ढांचे में होने वाले सूक्ष्म परिवर्तनों को रेखांकित किया। वहीं, योगेंद्र सिंह (1973) ने आधुनिक शिक्षा और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रभाव से होने वाले संरचनात्मक रूपांतरणों का विश्लेषण किया। इन साहित्यों की समीक्षा स्पष्ट करती है कि स्तरीकरण की प्रकृति ही गतिशीलता की दर और सामाजिक परिवर्तन की दिशा को निर्धारित करती है।

3. शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

प्रस्तुत शोध पत्र के तीन प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

i). **अंतर्संबंधों का सैद्धांतिक विश्लेषण:** सामाजिक स्तरीकरण, सामाजिक गतिशीलता और सामाजिक परिवर्तन की अवधारणाओं के मध्य मौजूद त्रिकोणीय और कार्यात्मक संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

ii). **गतिशीलता के बाधक एवं सहायक कारकों की पहचान:** यह विश्लेषण करना कि सामाजिक स्तरीकरण की संरचना (जैसे जाति या वर्ग) किस प्रकार सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करती है और शिक्षा एवं तकनीक इसमें सहायक की भूमिका कैसे निभाते हैं।

iii). **परिवर्तनकारी प्रभावों का मूल्यांकन:** इस बात का अध्ययन करना कि बड़े पैमाने पर होने वाली सामाजिक गतिशीलता किस प्रकार समाज के पारंपरिक ढांचे को बदलकर नए सामाजिक प्रतिमानों और मूल्यों (Social Change) को स्थापित करती है।

4. शोध विधि (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध पत्र में विषय की गहराई और प्रकृति को देखते हुए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध विधि (Descriptive and Analytical Research Method) का प्रयोग किया गया है।

5. सैद्धांतिक ढांचा (Theoretical Framework)

प्रस्तुत शोध पत्र का सैद्धांतिक आधार इस मान्यता पर टिका है कि समाज एक स्थिर इकाई न होकर एक गत्यात्मक तंत्र है, जहाँ 'स्तरीकरण', 'गतिशीलता' और 'परिवर्तन' एक त्रिकोणीय श्रृंखला के रूप में कार्य करते हैं। इस त्रिकोण को समझने के लिए निम्नलिखित समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों का विश्लेषण आवश्यक है:

i). सामाजिक स्तरीकरणसंरचनात्मक आधार

सामाजिक स्तरीकरण वह नींव है जिस पर सामाजिक संरचना टिकी होती है। मैक्स वेबर ने स्तरीकरण के 'त्रि-आयामी' मॉडल (शक्ति, संपत्ति और प्रतिष्ठा) के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि समाज केवल आर्थिक आधार पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक सम्मान और राजनीतिक शक्ति के आधार पर भी विभाजित होता है। वहीं, टैल्कोट पार्सन्स के प्रकार्यवाद (Functionalism) के अनुसार, स्तरीकरण समाज की एक आवश्यकता है जो व्यक्तियों को उनकी योग्यता और भूमिका के अनुसार विभिन्न स्तरों पर व्यवस्थित करती है। यह ढांचा तय करता है कि समाज में संसाधनों का वितरण कैसे होगा।

ii). सामाजिक गतिशीलता प्रवाह की प्रक्रिया

स्तरीकरण द्वारा निर्मित सोपानक्रम (Hierarchy) में होने वाली हलचल को पिरिटिम सोरोकिन के सिद्धांतों से समझा जा सकता है। सोरोकिन ने 'सोशल मोबिलिटी' के अंतर्गत स्पष्ट किया कि व्यक्ति या समूह अपनी स्थिति को बदलने के लिए निरंतर प्रयास करते हैं। उन्होंने मुख्य रूप से दो दिशाओं का वर्णन किया:

- **उर्ध्वगामी गतिशीलता (Upward Mobility):** जब व्यक्ति शिक्षा या धन के माध्यम से निम्न स्तर से उच्च स्तर की ओर बढ़ता है।
- **अधोगामी गतिशीलता (Downward Mobility):** जब व्यक्ति अपनी वर्तमान सामाजिक स्थिति से नीचे गिर जाता है। सोरोकिन के अनुसार, जिस समाज में गतिशीलता की दर अधिक होती है, वहाँ स्तरीकरण का ढांचा लचीला होता है, जो प्रगतिशील परिवर्तन के लिए द्वार खोलता है।

iii). सामाजिक परिवर्तन रूपांतरण का परिणाम

जब गतिशीलता व्यापक होती है, तो वह संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था में बदलाव लाती है। कार्ल मार्क्स के 'वर्ग संघर्ष' सिद्धांत के अनुसार, स्तरीकरण (बुर्जुआ और सर्वहारा) के बीच का संघर्ष ही सामाजिक परिवर्तन की मुख्य शक्ति है। मार्क्स का मानना था कि यह संघर्ष अंततः एक नई सामाजिक व्यवस्था को जन्म देता है। दूसरी ओर, विलियम ऑगबर्न ने 'सांस्कृतिक विलम्बना' (Cultural Lag) के सिद्धांत में बताया कि जब समाज का भौतिक पक्ष (तकनीक) तेजी से बदलता है और अभौतिक पक्ष (मूल्य, परंपरा) पीछे छूट जाते हैं, तो समाज में असंतुलन पैदा होता है। यही असंतुलन सामाजिक गतिशीलता को प्रेरित करता है ताकि समाज नए परिवर्तनों के साथ सामंजस्य बिठा सके।

6. त्रिकोणीय अंतर्संबंध (The Interconnected Triangle)

इन सिद्धांतों का समन्वय एक 'अंतर्संबंधात्मक त्रिकोण' निर्मित करता है। स्तरीकरण वह मंच प्रदान करता है जहाँ गतिशीलता की क्रिया होती है, और गतिशीलता का संचयी प्रभाव सामाजिक परिवर्तन के रूप में प्रकट होता है। उदाहरण के तौर पर, यदि वेबर के 'प्रतिष्ठा' के मापदंड बदलते हैं (परिवर्तन), तो समाज के निचले स्तर के लोगों को ऊपर उठने के नए अवसर (गतिशीलता) मिलते हैं, जिससे स्तरीकरण का पुराना ढांचा (जाति/वर्ग) पुनर्गठित हो जाता है। अतः, ये तीनों अवधारणाएं एक निरंतर चलने वाले चक्र का हिस्सा हैं, जहाँ एक में होने वाला कंपन शेष दो को अनिवार्य रूप से प्रभावित करता है।

मुख्य तुलनात्मक विश्लेषण (Key Comparative Analysis)

सामाजिक स्तरीकरण, गतिशीलता और परिवर्तन के मध्य संबंधों को केवल एक रेखीय प्रक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि एक वृत्ताकार और अंतःक्रियात्मक प्रक्रिया के रूप में समझा जा सकता है। इनका

तुलनात्मक विश्लेषण निम्नलिखित तीन प्रमुख आयामों में विभाजित है:

i). स्तरीकरण से गतिशीलता अवसर और सीमाएं

स्तरीकरण की प्रकृति यह निर्धारित करती है कि समाज के भीतर किसी व्यक्ति के लिए अपनी स्थिति बदलना कितना संभव है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, स्तरीकरण के दो प्रमुख रूप हैं-'बंद' और 'खुला'।

- **बंद स्तरीकरण (Closed Stratification):** उदाहरण के तौर पर पारंपरिक भारतीय जाति व्यवस्था। यहाँ व्यक्ति की सामाजिक स्थिति उसके जन्म से निर्धारित होती है। ऐसी व्यवस्था में सामाजिक गतिशीलता का मार्ग लगभग अवरुद्ध होता है। यदि कोई व्यक्ति अत्यंत प्रतिभाशाली भी है, तो भी वह अपने 'स्तर' को कानूनी या सामाजिक रूप से बदलने में सक्षम नहीं होता। यहाँ स्तरीकरण गतिशीलता का दमन करता है।
- **खुला स्तरीकरण (Open Stratification):** आधुनिक वर्ग-आधारित समाज (Meritocracy) इसका उदाहरण है। यहाँ स्तरीकरण का आधार जन्म के बजाय शिक्षा, धन और कौशल है। ऐसी व्यवस्था में गतिशीलता की दर बहुत उच्च होती है क्योंकि समाज व्यक्ति को ऊपर उठने के अवसर प्रदान करता है। अतः, स्तरीकरण जितना लचीला होगा, गतिशीलता उतनी ही तीव्र होगी।

ii). गतिशीलता से परिवर्तन व्यक्तिगत प्रगति से सामाजिक रूपांतरण

सामाजिक गतिशीलता केवल व्यक्तिगत उत्थान तक सीमित नहीं रहती; जब समाज का एक बड़ा समूह या वर्ग अपनी स्थिति बदलता है, तो वह पूरे समाज के संरचनात्मक ढांचे को प्रभावित करता है। इसे 'लंबवत गतिशीलता' (Vertical Mobility) के प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है।

- **उदाहरण:** 20वीं और 21वीं सदी में महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक गतिशीलता ने वैश्विक स्तर पर 'परिवार' नामक संस्था में आमूलचूल परिवर्तन किए हैं। जब महिलाएं शिक्षित होकर श्रम शक्ति (Labor Force) का हिस्सा बनीं, तो न केवल उनकी व्यक्तिगत आर्थिक स्थिति बदली, बल्कि इसने पितृसत्तात्मक मूल्यों, निर्णय लेने की प्रक्रियाओं और बच्चों के पालन-पोषण के पारंपरिक तरीकों को भी बदल दिया।
- **विश्लेषण:** यहाँ व्यक्ति की 'गतिशीलता' ने समाज के 'मूल्यों' और ' संस्थानों' में 'परिवर्तन' पैदा किया। यह दर्शाता है कि गतिशीलता वह इंजन है जो सामाजिक परिवर्तन के वाहन को आगे बढ़ाता है।

iii). परिवर्तन से पुनः स्तरीकरणनए मापदंडों का उदय

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया यहीं नहीं रुकती; यह अंततः स्तरीकरण के पुराने आधारों को ध्वस्त कर नए सोपानक्रम (New Hierarchy) का निर्माण करती है। इसे 'पुनः स्तरीकरण' (Restratification) कहा जाता है।

- **उदाहरण:** औद्योगिक क्रांति और वर्तमान में 'सूचना क्रांति' (Digital Revolution) ने समाज में स्तरीकरण के आधारों को पूरी तरह बदल दिया है। पहले स्तरीकरण का आधार 'भूमि' या 'वंश' था, लेकिन सामाजिक परिवर्तन (वैश्वीकरण और तकनीक) के कारण अब स्तरीकरण का आधार 'कौशल, तकनीकी ज्ञान और डिजिटल साक्षरता' बन गया है।
- **विश्लेषण:** आज समाज में एक नया विभाजन 'डिजिटल डिवाइड' के रूप में उभरा है। जो तकनीकी रूप से सक्षम हैं, वे उच्च स्तर पर हैं और जो नहीं हैं, वे निम्न स्तर पर। इस प्रकार, परिवर्तन ने पुराने स्तरीकरण को समाप्त किया और एक नया ढांचा तैयार कर दिया, जिस पर भविष्य की गतिशीलता आधारित होगी।
    1. स्तरीकरण वह 'सीमा' है जो गतिशीलता को दिशा देती है।
    2. गतिशीलता वह 'शक्ति' है जो सामाजिक स्थिरता को चुनौती देती है।
    3. परिवर्तन वह 'परिणाम' है जो समाज को एक नया रूप प्रदान करता है, जो फिर से एक नए प्रकार के स्तरीकरण को जन्म देता है।

समाज में स्थिरता और गतिशीलता के बीच का संतुलन ही इन तीनों के अंतर्संबंधों का मूल आधार है। शोध की दृष्टि से, यह त्रिकोणीय संबंध यह समझने में मदद करता है कि समाज कैसे विकसित होता है और क्यों कुछ समाज दूसरों की तुलना में अधिक प्रगतिशील होते हैं।

तालिका 1: सामाजिक स्तरीकरण, गतिशीलता एवं परिवर्तन: तुलनात्मक सारणी

तुलना का आधार	सामाजिक स्तरीकरण (Social Stratification)	सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility)	सामाजिक परिवर्तन (Social Change)
मूल अर्थ	समाज का विभिन्न समूहों या स्तरों में विभाजन (Hierarchy)।	एक सामाजिक स्तर से दूसरे स्तर में होने वाला स्थान परिवर्तन।	सामाजिक संरचना, संस्थाओं और मूल्यों में होने वाला व्यापक रूपांतरण।
प्रकृति	यह समाज की 'स्थिरता' (Stability) और ढांचे को दर्शाता है।	यह समाज की 'प्रवाहपूर्णता' (Fluidity) को दर्शाता है।	यह समाज की 'गत्यात्मकता' (Dynamics) को दर्शाता है।
मुख्य कारक	जन्म, जाति, वर्ग, धन, शक्ति और प्रतिष्ठा।	शिक्षा, कौशल, आय, विवाह और अवसर।	तकनीक, कानून, शिक्षा, नगरीकरण और वैश्वीकरण।
कार्य (Function)	समाज में कार्यों और संसाधनों का वितरण सुनिश्चित करना।	योग्य व्यक्तियों को उचित पद प्राप्त करने का अवसर देना।	समाज को आधुनिक और समय के अनुकूल बनाना।
परिवर्तन की गति	अत्यंत धीमी (पीढ़ी-दर-पीढ़ी)।	मध्यम (व्यक्तिगत प्रयासों पर निर्भर)।	तीव्र या मध्यम (आंदोलनों या तकनीक पर निर्भर)।
प्रभाव का स्तर	यह पूरे 'तंत्र' (System) की बनावट तय करता है।	यह 'व्यक्ति' या 'समूह' की स्थिति को प्रभावित करता है।	यह पूरे 'समाज और संस्कृति' के स्वरूप को बदल देता है।
उदाहरण	जाति व्यवस्था या अमीर-गरीब का भेद।	एक श्रमिक के पुत्र का आईएएस (IAS) अधिकारी बनना।	महिलाओं का सशक्तिकरण या डिजिटल क्रांति का प्रभाव।

तालिका 2: त्रिकोणीय संबंधों का विश्लेषण (Short Matrix)

अंतर्संबंध	प्रभाव (Impact)
स्तरीकरण → गतिशीलता	लचीला स्तरीकरण (जैसे वर्ग) उच्च गतिशीलता प्रदान करता है, जबकि कठोर स्तरीकरण (जैसे जाति) इसे रोकता है।
गतिशीलता → परिवर्तन	जब बड़े पैमाने पर लोग लंबवत गतिशीलता (Upward Mobility) प्राप्त करते हैं, तो समाज के मूल्य बदल जाते हैं।
परिवर्तन → स्तरीकरण	सामाजिक परिवर्तन पुराने स्तरीकरण को नष्ट कर नए आधार (जैसे डिजिटल साक्षरता) स्थापित करता है।

7. वर्तमान संदर्भ और चुनौतियाँ (Modern Context & Challenges)

वर्तमान परिदृश्य में सामाजिक संरचना अब केवल पारंपरिक बंधनों से नहीं, बल्कि आधुनिक उपकरणों और नीतियों से संचालित हो रही है।

i). **शिक्षागतिशीलता का मुख्य उत्प्रेरक:** आधुनिक समाज में शिक्षा को 'महान समकारी' (Great Equalizer) माना जाता है। शिक्षा ही वह एकमात्र माध्यम है जो जन्म पर आधारित 'बंद स्तरीकरण' की बेड़ियों को काटकर व्यक्ति को योग्यता आधारित 'खुले स्तरीकरण' में प्रवेश दिलाती है। उच्च शिक्षा और व्यावसायिक कौशल निम्न सामाजिक पृष्ठभूमि के व्यक्तियों को उर्ध्वगामी गतिशीलता (Upward Mobility) प्रदान करते हैं। हालाँकि, चुनौती यह है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुँच का अभाव अभी भी स्तरीकरण को बनाए रखता है, जहाँ 'संसाधन संपन्न' और 'संसाधन विहीन' वर्गों के बीच की खाई बनी हुई है।

ii). **तकनीक नया डिजिटल स्तरीकरण:** समकालीन युग में तकनीक, विशेष रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और सूचना संचार तकनीक (ICT), ने सामाजिक गतिशीलता के नए आयाम खोले हैं। लेकिन इसके साथ ही एक गंभीर चुनौती 'डिजिटल डिवाइड' के रूप में उभरी है। समाज अब 'डिजिटल साक्षर' और 'डिजिटल निरक्षर' के बीच एक नए स्तरीकरण का सामना कर रहा है। तकनीक जहाँ एक ओर सुदूर क्षेत्रों के छात्रों को वैश्विक अवसर प्रदान कर गतिशीलता बढ़ा रही है, वहीं दूसरी ओर तकनीकी संसाधनों से वंचित वर्ग के लिए सामाजिक परिवर्तन की दौड़ में बने रहना कठिन होता जा रहा है। यह तकनीक-आधारित स्तरीकरण आने वाले समय में सामाजिक असमानता का एक नया केंद्र बन सकता है।

iii). **नीतिगत प्रभाव NEP 2020 और समावेशी गतिशीलता:** भारतीय संदर्भ में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देने का एक क्रांतिकारी उपकरण सिद्ध हो रही है। यह नीति 'कौशल विकास' और 'भारतीय ज्ञान परंपरा' (IKS) पर बल देकर न केवल रोजगार के अवसर सृजित करती है, बल्कि सामाजिक सोपानक्रम में हाशिए पर खड़े वर्गों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास करती है। साथ ही, संवैधानिक आरक्षण और कल्याणकारी नीतियां ऐतिहासिक बाधाओं को दूर कर गतिशीलता को सुगम बनाती हैं। चुनौती इन नीतियों के जमीनी स्तर पर प्रभावी क्रियान्वयन की है, ताकि सामाजिक परिवर्तन केवल कागजों तक सीमित न रहकर वास्तविक संरचनात्मक बदलाव ला सके।

समाज एक ऐसे संक्रमण काल में है जहाँ शिक्षा और तकनीक पुराने स्तरीकरण को ध्वस्त कर रहे हैं, लेकिन साथ ही नए प्रकार की चुनौतियाँ भी पैदा कर रहे हैं। इन चुनौतियों का समाधान ही भविष्य की सामाजिक गतिशीलता और संतुलित परिवर्तन की दिशा तय करेगा।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र का विस्तृत विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक स्तरीकरण, गतिशीलता एवं परिवर्तन कोई स्वतंत्र अवधारणाएं नहीं हैं, बल्कि ये एक ही सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न क्रियाशील अंग हैं जो एक त्रिकोणीय श्रृंखला में कार्य करते हैं। सामाजिक स्तरीकरण वह संरचनात्मक आधार है जो समाज को स्थिरता और क्रम प्रदान करता है, किंतु इसकी प्रकृति ही सामाजिक गतिशीलता की दर को निर्धारित करती है। शोध से यह प्रमाणित होता है कि जब स्तरीकरण का ढांचा लचीला और योग्यता-आधारित होता है, तो वह व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुरूप ऊपर उठने के अवसर देता है, जबकि जन्म-आधारित जड़ता सामाजिक प्रगति को अवरुद्ध कर देती है। आधुनिक संदर्भ में शिक्षा और तकनीक ने स्तरीकरण की पारंपरिक बेड़ियों को तोड़कर गतिशीलता के नए मार्ग प्रशस्त किए हैं। व्यक्तिगत या सामूहिक गतिशीलता ही व्यापक सामाजिक परिवर्तन की जननी है। जब समाज का एक बड़ा वर्ग शिक्षा, कौशल और आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से अपनी स्थिति बदलता है, तो वह न केवल अपने जीवन स्तर को ऊँचा करता है, बल्कि समाज के स्थापित मूल्यों, संस्थाओं और शक्ति-संबंधों को भी मौलिक रूप से रूपांतरित कर देता है। महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और हाशिए पर खड़े वर्गों का मुख्यधारा में आना इस गत्यात्मकता के स्पष्ट उदाहरण हैं। यह सिद्ध होता है कि गतिशीलता वह 'इंजन' है जो सामाजिक परिवर्तन के वाहन को निरंतर गति प्रदान करता है, जिससे समाज की पुरानी और अप्रासंगिक व्यवस्थाएं स्वतः ही समाप्त होने लगती हैं। यह अध्ययन एक 'पुनरावृत्ति चक्र' को रेखांकित करता है, जहाँ सामाजिक परिवर्तन पुराने स्तरीकरण को समाप्त कर नए मापदंडों पर समाज को पुनर्गठित कर देता है। वर्तमान में 'डिजिटल साक्षरता' और 'विशिष्ट कौशल' स्तरीकरण के नए आधार बनकर उभरे हैं, जो भविष्य की गतिशीलता को निर्देशित करेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) जैसे नीतिगत हस्तक्षेप इस प्रक्रिया को और अधिक समावेशी बनाने का प्रयास कर रहे हैं। समग्र रूप से, यह शोध पत्र यह प्रतिपादित करता है कि समाज के सर्वांगीण विकास के लिए स्तरीकरण के ढांचे को लचीला रखना और गतिशीलता के अवसरों को व्यापक बनाना अनिवार्य है, क्योंकि यही संतुलन एक न्यायपूर्ण और प्रगतिशील सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करता है।

संदर्भ

1. अहूजा, आर. (2014). भारतीय सामाजिक व्यवस्था. रावत पब्लिकेशन्स.
2. ओगबर्न, डब्ल्यू. एफ. (1972). सामाजिक परिवर्तन. (अनुवादित). हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय.
3. गुप्ता, एम. एल., एवं शर्मा, डी. डी. (2021). समाजशास्त्र के तत्व. साहित्य भवन पब्लिकेशन्स.
4. घुरिये, जी. एस. (2010). भारत में जाति और प्रजाति. पॉपुलर प्रकाशन.
5. जैन, पी. सी., एवं दोषी, एस. एल. (2012). प्रमुख समाजशास्त्रीय विचारक. रावत पब्लिकेशन्स.
6. दोषी, एस. एल. (2003). भारतीय सामाजिक विचारक. रावत पब्लिकेशन्स.
7. धर्मवीर, एम. (2015). भारतीय समाजशास्त्र. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी.
8. भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा

मंत्रालय.
9. मुखर्जी, आर. के. (2008). भारतीय समाज का समाजशास्त्र. वाणी प्रकाशन.
10. यंग, पी. वी. (2004). सामाजिक सर्वेक्षण एवं शोध. (अनुवादित). अर्जुन पब्लिशिंग हाउस.
11. राव, एम. एस. ए. (1989). सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक गतिशीलता. वाणी प्रकाशन.
12. वर्मा, जे. पी. (2013). सामाजिक विज्ञान शोध पद्धतियाँ. उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान.
13. शर्मा, के. एल. (2010). भारतीय सामाजिक संरचना और परिवर्तन. रावत पब्लिकेशन्स.
14. सिंह, वाई. (2015). भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण. रावत पब्लिकेशन्स.
15. सोरोकिन, पी. ए. (1965). सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता. (संक्षिप्त संस्करण). राजकमल प्रकाशन।